17

ईसीसीई शिक्षक के गुण एवं भूमिका

हम सभी इस बात से परिचित हैं कि प्रारंभिक बाल्यकाल किसी भी बालक के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। इस अवस्था का प्रभाव व्यक्ति के समग्र जीवन पर जीवनपर्यन्त रहता है तथा उसे प्रभावित करता है। यदि इस समय बच्चे को पर्याप्त अधिगम संसाधन एवं देखभाल उपलब्ध करायी जाए, तो वह आगे चलकर एक स्वस्थ एवं सुखी मनुष्य के रूप में विकसित होता है। घर के अलावा ईसीसीई केन्द्र ही वह स्थान है जहाँ बच्चों को विभिन्न आयामों जैसे शारीरिक–गत्यात्मक, सामाजिक–संवेगात्मक, संज्ञानात्मक और भाषायी दक्षताओं में योग्यता प्राप्त करने की अभिप्रेरणा दी जाती है। ईसीसीई शिक्षक इन केंद्रों पर बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु सकारात्मक वातावरण तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। निष्कर्षत: प्रारंभिक बाल्यावस्था के विकास एवं अधिगम की प्रक्रिया हेतु अच्छे गुणवत्तापूर्ण शिक्षक महत्वपूर्ण हैं।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- एक प्रभावी ईसीसीई शिक्षक की विशेषताओं की व्याख्या करते हैं;
- एक ईसीसीई शिक्षक के उत्तरदायित्व और भूमिका की विवेचना करते हैं; और
- बच्चे के अधिगम वातावरण को बेहतर बनाने हेतु कौशल विकास की तकनीक बताते हैं।

17.1 ईसीसीई शिक्षक के गुण

ईसीसीई की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु प्रारंभिक शिक्षण और देखभाल में कार्यरत शिक्षकों की गुणवत्ता पर ध्यान देना आवश्यक है। बच्चे के लिए अनुकूल एवं बाल स्नेही वातावरण तैयार करने हेतु शिक्षक में कुछ विशेषताओं का होना आवश्यक है। ईसीसीई कार्यक्रम के उद्देश्यों को पहचानने एवं उनकी प्राप्ति करने हेतु शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

टिप्पणी

आइए, ईसीसीई शिक्षकों की मुख्य विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करते हैं। यह ना केवल इच्छित हैं अपितु आवश्यक भी है।

Frobel, the father of kindergarten, said: I understand it thus she (the mother) says, "I bring my child-take care of its as I would do," or do it with my child what is right to do, or "do it better than I am able to do it." An silent agreement is made between the parents and you, the teacher; the child is passed from hand to hand, from heart to heart. What else you can do but be a mother to the little one, for the hour, morning or day when you have the sacred charge of a young soul? In hope and trust the child is brought to you, and you have to show yourself worthy of the confidence which is placed in your skill, your experience and knowledge.

Source: Early childhood education Today. George S. Morrison-p-619.

एक ईसीसीई शिक्षक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए–

स्नेहशील एवं ध्यान रखने वाला

बच्चे स्नेह, दुलार तथा ध्यान से किसी के भी साथ घुल-मिल जाते हैं। जैसे ही बच्चा ईसीसीई केन्द्र के नये वातावरण में प्रवेश करता है, उसे एक स्नेहशील शिक्षक की आवश्यकता होती है जिस पर वह अपनी सभी आवश्यकताओं के लिये भरोसा कर सके। शिक्षक एवं बच्चे के मध्य विश्वास विकसित होने का कारण निस्वार्थ प्रेम एवं दुलार है। यह बच्चे के बेहतर सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास में भी सहायक है। शिक्षक द्वारा बच्चों का ख्याल रखना एवं परवाह करना उनमें एक हमेशा चलने वाला संबंध बनाने का पर्याय है। आपसी समझ तथा विश्वास से कक्षाकक्ष में आने वाली समस्याओं के निराकरण में भी सहायक है। इससे बच्चों में अपनत्व की भावना का विकास होता है जिससे वह भविष्य में दूसरों के साथ मजबूत रिश्तों की नींव रख पाता है। इसलिए स्नेहशीलता तथा ध्यान रखने वाला होना ईसीसीई शिक्षक का अत्यंत महत्वपूर्ण गुणों में से एक गुण है।

ऊर्जावान, अभिप्रेरित एवं उत्साही

एक सकारात्मक ऊर्जा से भरा जोशीला शिक्षक कक्षाकक्ष एवं बच्चों को सकारात्मक ऊर्जा दे सकता है। उत्साही शिक्षक एक ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जो सभी बच्चों के लिए आनंददायी होता है। खेल बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक है तथा उन्हें अपने आस-पास की विभिन्न वस्तुओं के बारे में खोजबीन करने तथा अधिगम के योग्य बनाता है। अभिप्रेरित शिक्षक बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियों में घुल-मिल जाते हैं। जो बच्चों तथा शिक्षक को विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से अनेक विचारों का उद्‌भव एवं विकास करने में सहायक होते हैं। यह विचार बच्चों एवं शिक्षकों के अधिगम का आधार है। ऐसे शिक्षक आंतरिक संतुष्टि एवं प्रसन्नता से बच्चों को अधिगम कराने में सफल होते हैं।

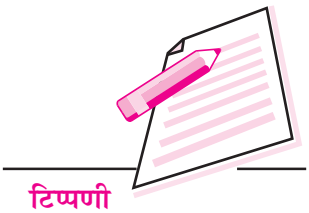

टिप्पणी

एक सक्रिय एवं सहृदय श्रोता

एक विदित तथ्य है कि किसी की समस्या को जानने एवं समझने हेतु हमें उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से सोचना चाहिए। इस तरह सोचने की प्रक्रिया को समानुभूति कहते हैं। यह तथ्य विद्यार्थी एवं शिक्षक संबंधों में भी उतना ही सत्य है। बच्चों की खुशी एवं दुख दोनों की जानकारी हेतु शिक्षक का एक सक्रिय एवं सहृदय श्रोता होना आवश्यक है। बच्चे अपने संवेगों और परिस्थितियों में प्रतिक्रिया को विभिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं। शिक्षक का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार उसे बच्चों के विचार तथा संवेगों को समझने में सक्षम बनाता है। इसी से बच्चे शिक्षक के जीवन में अपनी महत्ता पहचान पाते हैं। यही गुण शिक्षक को विभिन्न कक्षा-कक्ष एवं व्यवहारात्मक समस्याओं का निदान सफलतापूर्वक करने में सहायता करता है।

प्रसन्न तथा वचनबद्ध

क्या आप अपने स्कूल में कभी ऐसे शिक्षक से मिले हैं जो चिढ़ा हुआ, क्रोधी और हमेशा बच्चों को डांट लगाता हो? क्या आप ऐसे शिक्षक को पसंद करेंगे? शायद नहीं। शिक्षक का व्यक्तित्व बच्चों पर सीधा प्रभाव डालता है। सकारात्मक व्यक्तित्व वाले शिक्षक सकारात्मक संवेगात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं। ऐसे शिक्षकों को बच्चों की ओर से सहयोग और सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त होती हैं। ऐसे शिक्षक अपने पद की गरिमा समझते हैं तथा बच्चों के साथ कार्य खुशी से करते हैं।

धैर्यवान तथा लगनशील

शिक्षक को बच्चों की समस्याओं का धैर्य तथा लगन के साथ समाधान करना चाहिए। खेल तथा अन्य क्रियाओं के समय शिक्षक देखते हैं कि बच्चे खिलौने तथा अन्य सामान इधर-उधर रख देते हैं एवं कक्षाकक्ष और स्वयं को गंदा भी कर देते हैं। वे शिक्षक की अपेक्षा के अनुसार ना ही प्रतिक्रिया देते हैं ना ही सीखते हैं। ऐसे परिस्थितियों में शिक्षकों को बच्चों से नाराज अथवा गुस्सा नहीं होना चाहिए। अपितु बच्चों को आजादी देनी चाहिए कि वे अपनी सुरक्षा का ध्यान रखें, जैसे चाहे खेलें और सीखें और बच्चों को बेहतर सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार, एक बच्चे को अधिगम हेतु एक ही गतिविधि को बार-बार दोहराए जाने की आवश्यकता हो सकती है जबकि दूसरे बच्चे को इसी अधिगम के लिए विशेष अवधान (ध्यान) की आवश्यकता हो सकती है। विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ईसीसीई शिक्षकों को धैर्यवान एवं लगनशील होना चाहिए। शिक्षक को सकारात्मक परिणाम के लिए लगातार प्रयास करना चाहिए।

साव्यय और समायोजित

शिक्षकों को विभिन्न जरूरतों और क्षमताओं वाले बच्चों की कक्षा-कक्ष का प्रबंधन करना होता है। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए योजना बनाना ईसीसीई कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है। गतिविधियों के लिए प्रभावी योजना बनाने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए, शिक्षकों के पास आवश्यक समस्त संसाधन एवं स्रोत उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। वे शिक्षक जो साव्यय और

टिप्पणी

समायोजित हैं, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सकारात्मक परिणाम लाने में मदद कर सकते हैं। क्योंकि साव्यम और समायोजन कठोर नियमों के लिए बाह्य नहीं है, यह केन्द्र की सुचारू कार्य प्रणाली में भी मदद करता है। अत: शिक्षकों को, छोटे बच्चों के लिए अधिगम अनुभवों की योजना बनाते समय साव्यय और समायोजित दृष्टिकोण रखना चाहिए।

रचनात्मक तथा नवाचारी

बच्चे प्रकृति से उत्सुक होते हैं। वे अपने आसपास के वातावरण में नवीन खोज तथा घटनाओं के कारण जानने के इच्छुक होते हैं। वह अपने अनुसार वस्तुओं की कल्पना करते हैं। हर संभावित प्रश्नों के नवीन उत्तर खोज सकते हैं और अपने स्वयं के नवाचारी तरीकों से नयी खोजों का निर्माण कर सकते हैं। अत: बच्चों की इस अनोखी विचारधारा तथा अधिगम को प्रारंभिक बाल्यकाल से ही विकसित करने की आवश्यकता होती है जोकि उन्हें पूरी तरह से विकसित होने में सहायक हो। बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जिनमें वह प्रयोग और नवाचारी कार्य सीख सके।

अत: ईसीसीई उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षक का रचनात्मक तथा नवाचारी होना अति आवश्यक है।

संगठित

ईसीसीई शिक्षक को अनेक कार्य करने होते हैं जैसे कि कक्षा का संगठन, शिक्षण-अधिगम सामग्री निर्माण, बुलेटिन बोर्ड का विस्तार, शिक्षक-अभिभावक भेंट का आयोजन आदि। इसलिए संगठित होना शिक्षकों का एक अन्य गुण है जो शिक्षकों के पास होना चाहिए जिससे वह सभी क्रियाएँ सुचारू रूप से संचलित कर सकें।

प्रभावी संप्रेषक

शिक्षकों का संप्रेषण कौशल महत्वपूर्ण गुण है क्योंकि शिक्षक को बच्चों, अभिभावक, प्रधानाचार्य और समाज से प्रभावी रूप से संवाद करने की आवश्यकता होती है। बच्चों को अनेक प्रकार की गतिविधियों में व्यस्त रखने तथा उनकी रुचि बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। शिक्षक को अपने विचार सरल और स्पष्ट भाषा में व्यक्त करने चाहिए। सरल और स्पष्ट भाषा के प्रयोग से ही शिक्षक नन्हें बच्चों से संबंध बनाने में सफल होते हैं। शिक्षकों को उपयुक्त हाव-भाव, मुद्राओं, आवाज के स्वरों का उतार-चढ़ाव, आदि आने आवश्यक हैं। कहानी सुनाने, काव्य पाठ आदि गतिविधियाँ संचालित कर सकते हैं।

संप्रेषण करते समय संवाद कौशल के द्वारा शिक्षक अभिभावकों और अन्य हितधारकों के साथ अच्छे संबंध बनाने में सफल होता है। शिक्षकों के लिए यह कौशल महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कौशल बच्चे के सर्वांगीण विकास के भागीदार सभी पक्षों से संपर्क स्थापित करने में सहायक होता है।

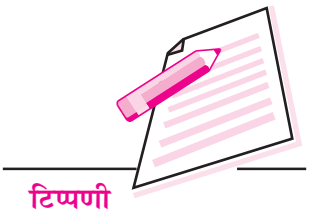

टिप्पणी

अभिभावक एवं समाज के साथ तालमेल बनाने हेतु प्रभावी

घर एवं ईसीसीई केंद्र ही दो महत्वपूर्ण स्थान हैं जहाँ पर बच्चा विकास, वृद्धि एवं अधिगम प्राप्त करता है। अभिभावकों की अपने बच्चों की शिक्षा तथा देखभाल में भूमिका के प्रति शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। शिक्षक एवं अभिभावक के मध्य होने वाला नियमित संप्रेषण बच्चों की आवश्यकताओं और विकास क्रम को समझने में सहायक होता है। साथ में समुदाय एवं अभिभावकों की केंद्र के संचालन में सक्रिय सहभागिता दोनों वातावरणों के मध्य दुराव को कम करती है। अत: अभिभावकों और समुदाय के मध्य मजबूत संबंध बच्चों के इष्टतम विकास के लिए आवश्यक है।

आत्म-विश्वास एवं उच्च आत्म-सम्मान

आत्म-विश्वास तथा उच्च आत्म-सम्मान ईसीसीई शिक्षकों के महत्वपूर्ण गुण हैं। कक्षा-कक्ष में एक स्वस्थ एवं सकारात्मक वातावरण का निर्माण करने के लिए उन्हें इन गुणों को आवश्यक रूप से आत्मसात एवं प्रदर्शित करना चाहिए।

पूर्ण रूप से प्रशिक्षित

ईसीसीई शिक्षकों में महत्वपूर्ण ज्ञान और कौशल होना चाहिए जो छोटे बच्चों को ढंग से संभालने के लिए प्रभावी होता है। बच्चों के अधिगम अनुभवों को अधिक सारगर्भित बनाने हेतु शिक्षकों को प्रारंभिक बाल्यावस्था और ईसीसीई गुणवत्ता के महत्व की जानकारी होनी चाहिए। जीवन की शारीरिक-गत्यात्मक, संवेगात्मक-संज्ञानात्मक और भाषीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षक को विकास एवं वृद्धि के मुख्य आधारों की जानकारी होना आवश्यक है।

बच्चों की विभिन्न भिन्नताओं के बावजूद, बच्चों की सीखने अनुभव और प्रदर्शन के समान अवसर प्रदान करने के लिए ईसीसीई शिक्षकों को विविधता और समावेशन की समझ होना आवश्यक है। ईसीसीई शिक्षकों से यह अपेक्षित है कि वह बच्चों के विकास की विशेषताओं और अधिगम आवश्यकताओं को समझते हुए ऐसे बच्चों की सहायता करें जो दिव्यांग हैं, सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े हैं या किसी प्राकृतिक आपदा, युद्ध एवं हिंसा के शिकार हैं।

शिक्षकों को शिक्षण कौशल और शिक्षण प्रणाली में अच्छी तरह से प्रशिक्षित होना चाहिए। इसके लिए उन्हें छोटे बच्चे कैसे सीखते हैं और शिक्षण प्रणालियों/विधियों को समझना चाहिए। अत: शिक्षक को अनेक शिक्षण अधिगम उपागमों जैसे खेल द्वारा सीखना, गतिविधि आधारित सीखना, करके सीखना, क्रिया द्वारा सीखना, खोज द्वारा सीखना, सहयोगात्मक सीखना, चर्चा, विचार-विमर्श से सीखना, भ्रमण द्वारा सीखना की जानकारी होना अति आवश्यक है और यह सभी ईसीसीई शिक्षक की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं।

टिप्पणी

अनुसंधान कौशल और जीवन-पर्यन्त शिक्षार्थी

ईसीसीई कार्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों को अनुसंधान में भी व्यस्त होना चाहिए। इन अनुसंधानों के आधार पर शिक्षक कक्षा-कक्ष में आने वाली तत्कालीन समस्याओं को हल करने, अपनी शिक्षण पद्धतियों पर पुनर्विचार करने और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार करने में सक्षम बनता है।

शिक्षकों को ईसीसीई के क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान और विकास के बारे में स्वयं को जागरूक रखना चाहिए। उन्हें व्यवसाय की माँगों तथा जरूरतों को पूरा करने के लिये अपने ज्ञान तथा कौशल के निरंतर विकास के लिये प्रयासरत रहना चाहिए। शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेषकर विकास के बारे में स्वयं को जागरूक रखना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 17.1

1. नीचे दिए गये ग्रिड में ईसीसीई शिक्षकों की प्रमुख विशेषताएँ पहचानिए–

c	c	t	p	q	s	m	b	b	l	y
o	r	g	a	n	i	s	e	d	o	o
n	i	n	n	o	v	a	t	i	v	e
f	e	m	p	a	t	h	e	t	i	c
i	m	s	a	c	x	z	i	l	n	a
d	p	s	t	r	b	c	i	l	g	r
e	t	t	i	e	d	k	n	p	c	i
n	l	q	e	a	c	t	i	v	e	n
t	c	p	n	t	h	f	d	c	j	g
f	c	l	t	i	n	m	c	x	k	f
n	k	m		v	o	n	z	z	z	m
0	j	f	l	e	x	i	b	l	e	b

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) शिक्षकों को ऐसे कक्षाकक्ष का प्रबंधन करना होता है जिसमें बच्चों की देखभाल करनी होती है जो विभिन्न ..... और ..... के बच्चे होते हैं।

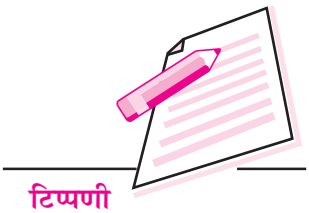

टिप्पणी

(ख) शिक्षकों से यह अपेक्षित है कि वह शिक्षा क्षेत्र में होने वाले नवीन .....और ..... से परिचित हों।

(ग) शिक्षक और अभिभावकों के मध्य नियमित संप्रेषण बच्चों की ..... और उनकी ..... क्रिया को समझने में सहायता करती है।

(घ) शिक्षक को अधिगम अनुभवों की योजना बच्चों के स्तर को देखते हुए बनानी चाहिए। इसके लिए शिक्षकों को ..... होना आवश्यक है।

(च) बालक विभिन्न प्रकार से अपने ..... को स्पष्ट करते हैं। यह ..... परिस्थिति के आधार पर होता है।

(छ) एक निस्वार्थ ..... और देखभाल की भावना से शिक्षक एवं बच्चों के मध्य ..... का विकास होता है।

17.2 ईसीसीई शिक्षक की भूमिका एवं उत्तरदायित्व

ईसीसीई शिक्षक बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी अनेक सक्रिय भूमिकाएँ हैं क्योंकि वे छोटे बच्चों के जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे स्वास्थ्य, आहार, सुरक्षा, संरक्षण और शिक्षा की देखभाल करने का उत्तरदायित्व लेते हैं।

आइए, ईसीसीई शिक्षकों की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों के बारे में जानते हैं–

बच्चों की सुरक्षा एवं रक्षा सुनिश्चित करना

बच्चों को शारीरिक एवं संवेगात्मक दोनों रूपों में सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है। एक ईसीसीई शिक्षक को अपने ईसीसीई केन्द्र पर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ईसीसीई केंद्र बच्चों के स्वतंत्र घूमने के लिए पूर्णत: सुरक्षित है। उनकी निरंतर निगरानी और देखभाल करने की आवश्यकता होती है।

शिक्षक से यह भी अपेक्षित है कि कक्षा-कक्ष में प्रशंसा प्रोत्साहन और सहयोग के द्वारा सुरक्षित संवेगात्मक एवं सकरात्मक वातावरण बनाएँ ताकि बच्चे अपने परिवेश में सहज और खुश महसूस कर सकें।

क्रियाकलाप योजना

ईसीसीई शिक्षकों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक प्रमुख भूमिका योजना बनाना है। ईसीसीई कार्यक्रम के प्रत्येक चरण में गुणवत्ता बनाये रखने के लिये योजना निर्माण आवश्यक है। इसके अंतर्गत शिक्षक को पाठ्यक्रम, समय सारणी, आयु उपयुक्त बाह्य और आंतरिक अधिगम क्रियाकलाप, मूल्यांकन तकनीक, शिक्षक-अभिभावक भेंट, कार्यशाला आदि सहित कई गतिविधियों की योजना बनाने की आवश्यकता होती है। शिक्षक बच्चों और उनकी आवश्यकताओं, सामाजिक आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं, संसाधनों की उपलब्धता और व्यवहारयता

टिप्पणी

को ध्यान में रखते हुए योजना बनानी चाहिए। अत: इच्छित परिणाम प्राप्त करने हेतु एक वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध योजना का होना आवश्यक है।

ईसीसीई पाठ्यक्रम का निर्माण एवं कार्यान्वयन

यह शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक बच्चों के विकास स्तर एवं उनकी आवश्यकताओं को समझते हैं। अत: शिक्षक को सक्रिय रूप से पाठ्यक्रम निर्माण में योगदान देना चाहिए जिसमें बच्चों को मिलने वाले सभी अनुभव समाहित हों।

एक पूर्ण रूप से निर्मित पाठ्यक्रम केवल तभी सफल हो सकता है जब शिक्षक पाठ्यक्रम को सही प्रकार से पढ़ाने और उसे क्रियान्वित करने के लिए प्रशिक्षित हों।

समृद्ध शिक्षण अधिगम वातावरण का निर्माण (Creating an enriching teaching leasuring enveronment)

प्रत्येक बच्चे की अपनी अधिगम शैली और अधिगम गति होती है। एक ही प्रकार की शिक्षण शैली सभी बच्चों पर प्रभावी नहीं होती है। ईसीसीई शिक्षकों की यह उत्तरदायित्व होती है कि वह छोटे बच्चों के लिए एक सहयोगात्मक और स्नेहशील वातावरण तैयार करे। ईसीसीई केन्द्र पर एक अच्छा अधिगम वातावरण तैयार करने के लिए अनेक पहलू योगदान देते हैं। आइए, हम इन पहलुओं के संबंध में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करें।

- ईसीसीई शिक्षक को कक्षा-कक्ष संगठन तथा उसका प्रबंधन करना होता है। इसके लिए विभिन्न क्रियाकलापों के लिये स्थान आवंटन, आयु उपयुक्त उपकरण तथा अधिगम सामग्री का चयन करना तथा दिव्यांग बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कक्षाकक्ष को व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है। बच्चों की सुरक्षा तथा बचाव को सुनिश्चित करना भी शिक्षक का ही दायित्व है।

- ईसीसीई शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के शिक्षण-अधिगम सामग्रियों का प्रयोग करके शिक्षण को रूचिकर और अर्थपूर्ण बनाना चाहिए। यह शिक्षकों का दायित्व है कि वह उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री प्राप्त करें। शिक्षक आवश्यकतानुसार स्थानीय उपलब्ध कम लागत या बिना लागत वाली सामग्री का उपयोग करके शिक्षण अधिगम सामग्री भी बना सकता है। इन्हें सामग्री का उपयोग अभिनव प्रकार से करना चाहिए और सामग्री को पुनर्चक्रण करना चाहिए।

  उदाहरण के लिए, खाली गत्ते के डिब्बे से कागज/पेन स्टैंड, चिड़ियों के दाने का बर्तन, खिलौने की बस, घर आदि बना सकते हैं। इसी प्रकार खाली प्लास्टिक बोतलों का प्रयोग रॉकेट, पेन स्टैंड इत्यादि बनाने के लिए किया जा सकता है। शिक्षक, बच्चों को बेकार सामग्री उनसे जोड़-तोड़ करके कुछ नया बनवाने का कार्य भी कर सकते हैं। इससे बच्चों

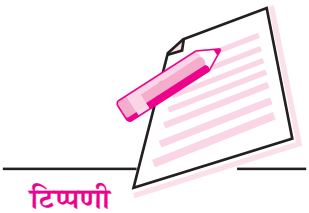

टिप्पणी

में रचनात्मकता तथा कल्पना का विकास करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक वातावरण में उपलब्ध सामग्री जैसे कंकर, सूखे पत्ते तथा घास-फूस भी बच्चों को आकर्षित करते हैं तथा बच्चे इस प्रकार की सामग्री के साथ खेलना पसंद करते हैं।

शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रयोग कई तरीकों और अभिनव प्रकार से करना चाहिए। उदाहरण के लिए, वे कंकड का प्रयोग चिकनी तथा खुरदरी सतह, जोड़, घटाना, खेलने, गिनती सीखने इत्यादि के लिए कर सकते हैं।

- शिक्षक आयु एवं विकास उपयुक्त, रूचिकर एवं आकर्षक अधिगम सामग्री बनाएँ। सभी बच्चों को खेलने, अवलोकन करने जोड़तोड़ करने, विमर्श करने, खोजने एवं प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। शिक्षकों द्वारा विभिन्न विकास आयामों के लिए गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, वह सामाजिक-संवेगात्मक तथा भाषायी विकास हेतु किसी नाटक का आयोजन कर सकते हैं। साथ ही निकट के पार्क भ्रमण से शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास का भी प्रयास कर सकता है।

- शिक्षकों का यह दायित्व है कि कक्षा में हर बच्चा स्वयं को सम्मानित, स्वीकार्य तथा स्वागत योग्य अनुभव करे। कक्षाकक्ष में मौजूद विविधता की सहभागिता को सुनिश्चित करने के लिये शिक्षक को अधिगम प्रक्रिया ऐसे संगठित करनी चाहिए कि सभी बच्चों को भाग लेने तथा अभिव्यक्ति के समान अवसर मिले। दिव्यांग बच्चों को भी उनके विकास और अधिगम में आवश्यक सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

- शिक्षकों का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह बच्चों की वृद्धि एवं विकास की पद्धति की पहचान करने, उनकी प्रगति की निगरानी करने, उन्हें सहयोग प्रदान करने और सक्रिय वातावरण बनाने के लिए नियमित मूल्यांकन करें। यह अवलोकन, उपाख्यानात्मक अभिलेख और पोर्टफोलियो द्वारा किया जा सकता है।

कार्यक्रमों और क्रियाकलापों का आयोजन

- ईसीसीई शिक्षकों का एक महत्वूपर्ण दायित्व यह भी है कि वह शिक्षक अभिभावक बैठक (PTM-Parents teachers meeting) का आयोजन करे। शिक्षक और अभिभावक दोनों को बच्चों के समग्र विकास के लिए कार्य करना चाहिए। अत: इन बैठकों के माध्यम से दोनों पक्ष बच्चों के अधिगम और विकास को बढ़ावा देने के लिए सहयोगात्मक रूप से कार्य कर सकते हैं।

- बच्चों को सहयोगात्मक रूप से कार्य कर विकास के लिए विभिन्न अवसर प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। ईसीसीई शिक्षकों से यह अपेक्षित है कि वह बच्चों से जुड़े उनके दिन प्रतिदिन के जीवन से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विशेष वार्ता/चर्चा का

आयोजन करे। यह विषय दैनिक जीवन के आने वाले कार्य भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए: पीने का स्वच्छ पानी, पानी तथा बिजली बचाना, पेड़ लगाना, स्वस्थ भोजन तथा शरीर, जानवरों को सुरक्षा प्रदान करना इत्यादि। शिक्षकों से विशेष दिनों के लिये आयोजन करने और इन कार्यक्रमों में बच्चों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने की भी उम्मीद की जाती है।

ईसीसीई शिक्षकों को, अभिभावकों तथा समुदाय के सदस्यों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम तथा कार्यशालाओं का आयोजन करने की भी आवश्यकता होती है।

पाठगत प्रश्न 17.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. एक ईसीसीई शिक्षक को ..... अनुसार कम खर्चीली तथा सस्ती सामग्री प्रयुक्त करनी चाहिए।
2. बच्चों के ..... विकास हेतु उन्हें पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए।
3. शिक्षक रचनात्मक रूप से ..... और ..... सामग्री को अभिनव प्रकार से प्रयोग करता है।
4. वांछित परिणामों की प्राप्ति हेतु ..... और ..... योजना आवश्यक है।
5. शिक्षकों को सक्रिय रूप से ..... निर्माण में सहयोग करना चाहिए।
6. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उपयुक्त सहायता मिलनी चाहिए। यह सहायता ..... और ..... पक्ष में होनी चाहिए।

गतिविधि 17.1

किसी भी ईसीसीई शिक्षक से बातचीत कीजिए तथा उनकी भूमिकाओं को सूचीबद्ध कीजिए।

आपने क्या सीखा

- शिक्षक–अभिभावक बैठक का कार्यक्रम एवं क्रियान्वयन करना।
- बच्चों हेतु उनके दैनिक जीवन से जुड़े हुए एवं सार्थक प्रकरणों पर विशेष बातचीत/अन्तर्क्रिया का आयोजन करना, अभिभावक तथा समुदाय सदस्यों के लिए उन्मुखी कार्यक्रम और कार्यशालाओं का संचालन करना।

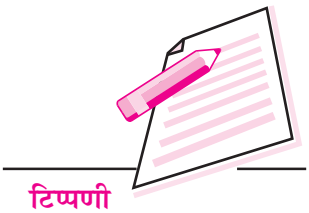

टिप्पणी

- सुनिश्चित करना कि कक्षा-कक्ष का प्रत्येक बच्चा स्वयं को सम्मानित, स्वीकार्य और स्वागत योग्य समझना तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को विकास एवं अधिगम के लिए निश्चित रूप से आवश्यक कक्षा की विविधताओं का प्रबंधन करना।
- आयु अनुरूप, विकासोचित, आकर्षक एवं रूचिकर अधिगम अनुभवों का आयोजन करना। सभी बच्चों को खेल, अवलोकन, हस्त संचालन, अन्तर्क्रिया, खोजबीन एवं प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने चाहिए।
- विषय को रूचिपूर्ण एवं आनंददायी बनाने हेतु विविध शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करना चाहिए। अधिगम सामग्री परिवेश में उपलब्ध कम लागत या बिना लागत की सामग्री से तैयार की जानी चाहिए शिक्षण अधिगम सामग्री का एकाधिक रूप से नवाचार सृजनात्मक उपयोग करना चाहिए।
- कक्षा कक्ष की व्यवस्था एवं प्रबंधन: विभिन्न क्रियाकलापों के लिए स्थान सुनिश्चित करना, आयु के अनुसार उपयुक्त उपकरण तथा अधिगम सामग्री का चयन करना एवं कक्षा-कक्ष में स्थान की उचित व्यवस्था।
- ईसीसीई पाठ्यक्रम की रचना एवं सफलतापूर्वक लागू करना।
- संवेगात्मक रूप से सुरक्षित एवं सकारात्मक वातावरण प्रदान करना। ऐसा वातावरण प्रशंसा अभिप्रेरणा और बच्चों के लिए सहायता प्रदान करता है जिससे बच्चे आनंद और सुख की अनुभूति करते हैं।
- विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों की योजना बनाना, उदाहरण के लिए: पाठ्यक्रम, समय-सारणी, आयु के अनुसार आतंरिक एवं बाह्य अधिगम क्रियाएँ करना, मूल्यांकन तकनीक का प्रयोग, शिक्षक-अभिभावक बैठक, कार्यशाला आदि।
- नियमित आकलन करना।

ईसीसीई शिक्षक के गुण

- स्नेहशील एवं ध्यान रखने वाला
- एक सक्रिय एवं सहृदय स्रोता
- ऊर्जावान, उत्साही एवं अभिप्रेरित
- प्रसन्न एवं वचनबद्ध
- धैर्यवान एवं लगनशील
- साव्यय एवं समायोजित
- रचनात्मक एवं नावाचारी संगठित
- प्रणाली संप्रेषक
- आत्म-विश्वासी एवं उच्च आत्म-सम्मान

टिप्पणी

- अभिभावक एवं समाज के साथ तालमेल बनाने हेतु प्रभावी
- अनुसंधान कौशल एवं जीवन-पर्यन्त शिक्षार्थी

पाठांत प्रश्न

1. ईसीसीई शिक्षकों की भूमिका तथा उत्तरदायित्वों पर व्याख्या कीजिए।
2. ईसीसीई शिक्षकों के गुणों की विवेचना कीजिए।
3. ईसीसीई शिक्षक बच्चों के लिए उपयुक्त अधिगम वातावरण का निर्माण किस प्रकार कर सकता है?

उत्तरमाला

17.1

1.

c	c	t	p	q	s	m	b	b	l	y
o	r	g	a	n	i	s	e	d	o	o
n	i	n	n	o	v	a	t	i	v	e
f	e	m	p	a	t	h	e	t	i	c
i	m	s	a	c	x	z	i	l	n	a
d	p	s	t	r	b	c	i	l	g	r
e	t	t	i	e	d	k	n	p	c	i
n	l	q	e	a	c	t	i	v	e	n
t	c	p	n	t	h	f	d	c	j	g
f	c	l	t	i	n	m	c	x	k	f
n	k	m		v	o	n	z	z	z	m
0	j	f	l	e	x	i	b	l	e	b

2.

(क) आवश्यकता, योग्यता (ख) ज्ञान, विकास (ग) आवश्यकता, विकास (घ) लचीला
(च) संवेग, संवेग (छ) प्यार, विश्वास

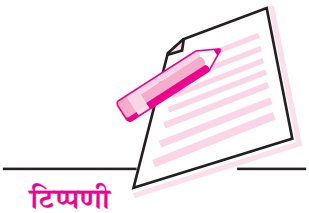

टिप्पणी

17.2

1. आसानी से उपलब्ध 2. सर्वांगीण 3. उपयोग, पुनश्चक (recycle) 4. विचारशील, सुसंगत 5. पाठ्यक्रम 6. विकास, अधिगम

संदर्भ सूची:

- Ministry of Women and Child Development. (1975). *Integrated Child Development Services Scheme*. Retrieved from https:// icds-wcd.nic.in/
- Ministry of Women and Child Development. (2013). *National Curriculum Framework for ECCE, 2013*. New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development. (2013). *National Curriculum Framework for ECCE, 2013*. New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development. (2013*). National Early Childhood Care and Education Policy, 2013*. Retrieved fromhttps:// wcd.nic.in/ sites/default/files/ National%20Early%20Childhood%20Care%20 and%20Education-Resolution.pdf
- Morrison, S.G. (2018). *Early Childhood Education Today*. New Delhi: Pearson.
- National Council of Educational Research and Training. (2005). *National Curriculum Framework, 2005*. New Delhi: NCERT.